Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-8 | August-2024 | Page 45-50

धनबाद जिले के शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में एक अध्ययन

नूतन कुमारी
शोधार्थी कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
डॉ. अदित्य प्रकाश सक्सेना
शोध निर्देशक कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

किसी भी क्षेत्र में नवीन ज्ञान की प्राप्ति अथवा विद्यमान ज्ञान में संशोधन परिवर्द्धन अथवा परिमार्जन की दृष्टि से किये गये व्यवस्थित प्रयासों को शोध या अनुसंधान कहते हैं। शोध का उद्देश्य किसी समस्या से संबंधित समान्य सिद्धांतों की व्यवस्थित खोज भी हो सकता है। सभी अनुसंधानों का प्रत्यक्ष उद्देश्य मानव ज्ञान की वृद्धि करना है। एक ऐसी शोध जिसका उद्देश्य तत्कालिक अथवा दूरगामी महत्व की व्यावहारिक समस्याओं का समाधान खोजना होता है, व्यावहारिक शोध कहलाती है। इस प्रकार के शोध में तथ्यों का संकलन नीति–निर्माताओं की आवश्यकता तथा उपयोगिता की दृष्टिकोण से किया जाता है। शोध का वह रूप जिसमें शोधकर्ता एवं अथवा अधिक स्वतंत्र चरों को परिचालित अथवा नियंत्रित कर आश्रित चरों पर उनके प्रभावों की जांच करता है, प्रयोगात्मक शोध कहलाता है।

अनुसंधान प्रक्रिया में परिकल्पनाओं की रचना के पश्चात् अनेक परीक्षण के लिये एकत्रित किये गये तथ्यों को सुव्यवस्थित करके उन आँकड़ों की व्याख्या व विश्लेषण करना आवश्यक हाता है। विश्लेषण के अंतर्गत प्राप्त आँकड़ों को क्रमबद्ध रूप से प्रदान किया जाता है तथा उनकों संघटक भागों में इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है ताकि अनुसंधान प्रश्नों के उत्तर प्राप्त मूल आँकड़ों तथा संकेतीकृत सामग्री को व्यवस्थित व संक्षिप्त रूप प्रदान किया जा सके। प्राप्त क्रमबद्ध आँकड़ों का वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया जाता है ताकि अनुसंधान के प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किये जा सकें।

आँकड़ों के विश्लेषण से अभिप्राय आँकड़ों में समाहित तथ्यों तथ्य अर्थो को निर्धारित करने हेतु सारणीबद्ध विषय सामग्री का अध्ययन करना है। इस संपूर्ण प्रक्रिया में जटित कारकों को खंडित करके सरलीकृत खंड़ो में विभाजित करना तथा व्याख्या के उद्देश्य से उन अंशों

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-8 | August-2024 | Page 45-50

या अंगों को नवीनतम व्यवस्था के संदर्भ में समायोजित करना होता है। यह एक वैज्ञानिक विधि है फलस्वरूप आँकड़ों तथा तथ्यों का विश्लेषण बहुत से उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए आवश्यकतानुसार सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।

शोधकर्ता अपने अनुसंधान के परिणामों के संबंधों में ही विवेचना के द्वारा शोधकार्य से संबंधित समस्याओं का उत्तर प्राप्त करता है। यदि प्राप्त निष्कर्षों से रचित परिकल्पनाओं की पुष्टि होती है तब इसमें समस्या की ओर अपेक्षित संकेत होता है।

करलिंगर के अनुसार '' विवेचन के अंतर्गत विश्लेषण के परिणामों को लिया जाता है इसके द्वारा अनुसंधान के अंतर्गत प्राप्त संबंधित संबंधों के प्रति निष्कर्ष प्राप्त किये जाते है।''प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य धनबाद जिले के शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में एक अध्ययन'' करना है। उपरोक्त अध्ययन के लिए संबंधित समस्या के समाधान हेतु प्रस्तुत उद्देश्यों की पूर्ति तथा परिकल्पनाओं की पुष्टि हेतु वैधता तथा विश्वसनीयता स्तर पर निर्मित उपकरणों का प्रयोग मेरे द्वारा (शोधकर्ता) द्वारा किया गया।

प्रस्तुत शोध हेतु प्रथम उद्देश्य धनबाद जिले के शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में एक अध्ययन करने हेतु निर्मित परिकल्पना धनबाद जिले के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा की पुष्टि तालिका क्रमांक 1 एवं 2 के आधार पर सार्थक पायी गयी। इस प्रकार प्रथम परिकल्पना की पुष्टि होती है।

प्रस्तुत शोध के द्वितीय उद्देश्य धनबाद जिले के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का सामाजिक स्वास्थ्य का अध्ययन करने हेतु निर्मित परिकल्पना धनबाद जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक सामंजस्य में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा पुष्टि सामाजिक सामधरय फलांकन तालिका क्रमांक 3 एवं 4 के आधार पर सार्थक सिद्ध हुई अतः तृतीय उद्देश्य की पुष्टि होती है।

5. प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निर्मित तृतीय उद्देश्य धनबाद जिले के शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों (छात्र–छात्राओं) के मानसिक स्वास्थ्य का सामाजिक समन्वय पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा की पुष्टि सामाजिक + भावनात्मक फलांकन तालिका क्रमांक 5, 6, 7, 8 एवं के आधार पर सार्थक सिद्ध होती है।

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-8 | August-2024 | Page 45-50

परिणामों की व्याख्या

विभेदात्मक अध्ययन से संबंधित परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं विवेचन

परिकल्पना 1

धनबाद जिले के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा :–

परिणाम :– प्रस्तुत अध्ययन में उपर्युक्त परिकल्पना की जाँच हेतु धनबाद जिले के शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं को मानसिक स्वास्थ्य मापनी का वितरण एवं प्रशासन किया गया तथा उनके आंकड़े प्राप्त किये गये इन आंकड़ों को तालिकाओं का निर्माण किया गया एवं प्राप्त अंकों को स्टेनाईन अंक 2 स्कोर के आधार पर तालिका क्रमांक 4, 6 प्रस्तुत किया गया है। तालिका क्रमांक 4.2 अ एवं 4.2 ब के आधार पर प्राप्त मानक अंको में सार्थक अंतर नही पाया गया अतः अध्ययन हेतु उद्देश्य क्रमांक 1 ''धनबाद जिले के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वारूप का अध्ययन'' करने हेतु निर्मित परिकल्पना क्रमांक – 1 ''धनबाद जिले के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वारूप में सार्थक अंतर नही पाया जाएगा की पुष्टि होती है अतः परिकल्पना क्रमांक 1 सार्थक सिद्ध होती है।

निषकर्ष :– अतः यह निषकर्ष निकाला गया कि शोधार्थी द्वारा अपने उद्धेश्य के पूर्ति के लिए निर्मित परिकल्पना कथन ''धनबाद जिले के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वारूप में सार्थक अंतर नही पाया जाएगा की पूष्टि होती है अतः परिकल्पना क्रमांक 1 सही पाई गई।

परिकल्पना 2

धनबाद जिले के शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों (छात्र + छात्राओं) के सामाजिक समन्वय में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा ।

परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन में उपर्युक्त परिकल्पना की पुष्टि हेतु सामाजिक सामंजस्य अनुसूची का वितरण एवं प्रशासन किया गया तथा आंकड़े प्राप्त किये गये। इन आंकड़ो को तालिका क्रमांक

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-8 | August-2024 | Page 45-50

4.4 अ एवं 4.4 ब में प्रस्तुत किया गया एवं स्टेनाईन अंक 2 स्कोर प्राप्त किया गया इस प्रकार इस परिकल्पना की पुष्टि होती है।

निषकर्ष :– अतः यह निषकर्ष निकाला गया कि शोधार्थी द्वारा अपने उद्धेश्य के पूर्ति के लिए निर्मित परिकल्पना '' धनबाद जिले के शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों (छात्र + छात्राओं) के सामाजिक समन्वय में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा '' सही पाई गई।

परिकल्पना 3

धनबाद जिले के शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों (छात्र + छात्राओं) के मानसिक स्वास्थ्य का सामाजिक समन्वय पर सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

परिणाम :– प्रस्तुत अध्ययन में उपर्युक्त परिकल्पना की पुष्टि हेतु शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को मानसिक स्वास्थ्य बैटरी एवं सामाजिक सामंज्य अनुसूची या वितरण एवं प्रशासन किया गया तथा आंकड़े प्राप्त किये गये प्रस्तुत आंकड़े को तालिका क्रमांक 4.6 अ एवं 4.6 ब में प्रस्तुत किया गया एवं इस आधार पर चौथी परिकल्पना सार्थक सिद्ध होती है।

निषकर्ष :– अतः यह निषकर्ष निकाला गया कि शोधार्थी द्वारा अपने उद्धेश्य के पूर्ति के लिए निर्मित परिकल्पना '' धनबाद जिले के शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों (छात्र + छात्राओं) के मानसिक स्वास्थ्य का सामाजिक समन्वय पर सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा '' सही पाई गई।

अध्ययन की शैक्षणिक उपयोगिता

प्रस्तुत शोध अध्ययन में धनबाद जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक समन्वय का अध्ययन किया गया है। शिला एवं समाज का घनिष्ठ संबंध है। अभिभावक एवं विद्यार्थी इस व्यवस्था के मजबूत अंग है। चूंकि विद्यार्थियों को समाज के भावी निर्माताओं के रुप में देखा जाता है और एक समाज की उन्नति की जिम्मेदारी हमारे इन्हीं विद्यार्थियों की होती है। विद्यार्थियों की शिक्षा, उनका परिवार उनका व्यवहार एवं उस व्यवहार को फलित रुप ही एक स्वस्थ समाज होता है। अतः क्रम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों का, व्यक्तित्व एवं उनके अभिभावक या परिवार रुपी संस्थाऐं जब अपना सकारात्मक व्यवहार ही समाज को गतिशीलता प्रदान करते हैं एवं इसी कारणवश उनका मानसिक, शारीरिक, व्यावसायिक एवं सांस्कृतिक रुप से रीति–रिवाजों, परम्पराओं, धर्म आदि से जुड़ा होना आवश्यक

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-8 | August-2024 | Page 45-50

है। इन्हीं के द्वारा विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा सामाजिक परिवेश में सकारात्मक समायोजन संभव हो पाता है।

अतः विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की शिक्षा में तथा वहां के शैक्षिक वातावरण में उपयोगी परिवर्तनों के आधार पर विद्यार्थियों के मानसिक स्वासयि एवं समायोजन अथवा सामंजस्य की स्थिति को मजबूत किया जा सकता है। शिक्षकों, अभिभावकों एवं अन्य संरचनाओं के उचित एवं प्रबंधित मार्गदर्शन के द्वारा विद्यार्थियों को निर्देशित किया जा सकेगा। सीखने की सहज एवं जन्मजाति प्रक्रिया को समायोजन में महत्वपूर्ण स्थान है। समय–समय पर उचित दिशा–निर्देश एवं सहगामी क्रियाओं के आधार पर उनके मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य की अभिवृद्धि हेतु कार्य किये जा सकते हैं। देशकाल एवं वातावरण के अनुसार वातावरण में उपस्थित विभिन्नताओं को समझने व उनमें एकरुपता लाने के लिए शैक्षिक व सामाजिक वातावरण में समायोजन की प्रक्रिया अपनाई जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ

- अग्रवाल, डॉ.जी.के., (1980) *मानव समाज,* आगरा ओम प्रिटिंग प्रेस , पचकुइंया. पृष्ठ संख्या 134–135
- गोवे, डब्बु और ह्यूजेस, एम (1979) *शारीरिक स्वास्थ्य में स्पष्ट लिय अंतर के संभावित कारण एक अनुभवजन्य जांच.* अमेरिकी समाज सगीक्षा, 44: 126–146
- चित्रा, उमा 1993–2000 एट आल इट इज ऐन अटेग्ड टू स्टडी द एजकेशनल अचीवमेंट इन रिलेशन टू सम ऑफ द साइको – *सोसल फेक्टर्स ऑफ द सोशली डिप्राइव्ड हरिजन्स सिकसथ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च,* वैल्यूम – पृ0सं0–466
- चोबे डा. सरयू प्रसाद (1993), *सामाजिक मनोविज्ञान आगरा,* साहित्य भवन, पृष्ठ संख्या – 110–115
- भार्गव, महेश, (1992), " आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन ,प्रसाद भार्गव, शैक्षिक प्रकाशन, 1 / 230, कचहरी घाट, आगरा,
- माथुर, डॉ. एस.एस (2009) *"शिक्षा मनोविज्ञान"*, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा – 2, पृष्ठ 60

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-8 | August-2024 | Page 45-50

- मिश्र, आनन्द, (1999), *"भारतीय शिक्षा के प्रवर्तक"* विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, कानपुर
- मिश्रा, डीएसी., (1998), " *भारत में शैक्षिक पद्धति का विकासः अनुसंधान* प्रकाशन, कानपुर
- मिश्र, श्रीकान्त, (1992), *"नैतिक शिक्षा के ग्रति शिक्षकों छात्रों एवं आभिभावकों की अभिवृत्ति एवं उनकी धर्म निरपेक्ष नैतिकता का अध्ययन"* पी–एच. डी. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, पृष्ठ संख्या 129
- मुकर्जी रवीन्द्रनाथ (1975), *भारतीय ग्रागीण समाज शास्त्र,* बरेली, प्रकाशन बुक डिपो, बड़ा बाजार पृष्ठ संख्या 156–177
- मुखर्जी, रविन्द्र नाथ, (4983), *भारतीय सयाजिक संस्थाएं* ,विवेक प्रकाशन, यू.ए. जवाहर नगर दिल्ली पृष्ठ संख्या 111–123
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), अनुच्छेद 84, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार (शिक्षा विभाग), नई दिल्ली पृष्ठ संख्या 177
- रूहेसा, एस.पी., (1992), *"भारतीय शिक्षा का सयाज शास्त्र "* राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृष्ठ संख्या – 83–86
- कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2007) *एजुकेशन साइकोलॉजी* सूर्या पब्लिकेशन (मेरठ)
- सरीन ,रामपाल शर्मा ,ओ.पी. (2008) *शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी* आर. लाल बुक डिपो (मेरठ) पृष्ठ संख्या –88–103
- शर्मा आर.ए. 2012 *शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया,* आर. लाल बुक डिपो (मेरठ) पृष्ठ संख्या – 23–36